संपादकीय

हंस शोध सुधा के नए अंक में चयनित सामग्री शोध की दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण हैं। पत्रिका का आरंभ ही शोध को मौलिकता और गंभीरता से जोड़ने के लिए किया गया है। इस पत्रिका को हंसराज कॉलेज की अकादमिक उपलब्धियों को और अधिक मजबूती प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। हंस शोध सुधा में प्रकाशित लेखों की गुणवत्ता और उपयोगिता दोनों की जांच की जाती है। हमारी कोशिश रहती है कि इसमें हंसराज कॉलेज के प्राध्यापकों के साथ दूसरे महाविद्यालय और विश्वविद्यालय के लेख भी प्रकाशित हों जिससे पत्रिका में वैचारिक और लेखकीय विविधता बनी रहे। हंस शोध सुधा पत्रिका की समिति ना केवल लेखों का बकायदा अध्ययन करती है बल्कि उसका प्लेगरिज़्म भी करती है जिससे उसके संदर्भों और लिखे गए सामग्री की मौलिकता की जांच हो सके। हंसराज कॉलेज में वर्षीय पत्रिका 'हंस' का संपादन आरंभ से हो रहा है जिससे कॉलेज के विद्यार्थी और शिक्षक मिलकर लिखते हैं लेकिन शोध की दृष्टि से निर्णायक कार्य करने के लिए हंस शोध सुधा का आरंभ किया गया। मुझे बेहद खुशी है कि पत्रिका अपने विजन में कामयाब हो रही है। लेखों की संख्या लगातार बढ़ रही है। हंस शोध सुधा को अकादमिक जगत की महत्वपूर्ण पत्रिका बनाने में सहयोग करने वाले सभी सहयोगियों का आभार। समिति के सभी प्रबुद्ध जनों का आभार। विभिन्न संकायों से जुड़े प्राध्यापकों को साधुवाद देते हुए यही कामना है कि हंस शोध सुधा देश की निर्णायक पत्रिका बने और बिना किसी पक्षपात के लेखों का चुनाव करे जिससे हंसराज कॉलेज द्वारा अकादमिक जगत की महत्वपूर्ण पत्रिका साबित हो सके।

प्रोफ रमा
प्राचार्या
हंसराज महाविद्यालय